ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 02 कुल पृष्ठ-8 31 मार्च से 6 अप्रैल, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 चै.कृ.-13

आर्य समाज अटौर नंगला, फिरोज मोहनपुर, जिला–गाजियाबाद (उ. प्र.) में चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ एवं वैदिक विवाह संस्कार का भव्य कार्यक्रम हुआ आयोजित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य समाज अटौर नंगला, फिरोज मोहनपुर, जिला–गाजियाबाद की ओर से श्री छोटे लाल इण्टर कॉलेज के प्रांगण में दिनांक 19 से 21 मार्च, 2022 को भव्य चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, चौ. तेजपाल सिंह तोमर, चौ. अमन सिंह अध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद्, मेरठ, चौ. बृजपाल सिंह तेवतिया, इं. श्री सुभाष जी, श्री देवेन्द्र जी, श्री सेवाराम त्यागी मंत्री जिला सभा गाजियाबाद, श्री ज्ञानेन्द्र आर्य प्रधान जिला सभा, श्री तेजपाल सिंह आर्य, डॉ. विरेन्द्र सिंह, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य एवं विदुषी बहन अंजलि आर्या, श्री वेद पाल आर्य भजनोपदेशक आदि ने सम्मिलित होकर अपने प्रवचनों एवं भजनों से उपस्थित श्रोताओं को लाभान्वित किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री रामपाल सिंह आर्य के सुपौत्र एवं श्री कृष्णपाल सिंह के सुपुत्र चि. विपिन का वाग्दान संस्कार एवं विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस विवाह संस्कार में विभिन्न जिलों से पधारे आर्यजनों ने विशेष प्रेरणा ली और मुक्त कंठ से वर एवं कन्या पक्ष के परिवारों की प्रशंसा की। बिना दहेज के किये गये इस विवाह संस्कार में वैदिक विद्वानों के न केवल उपदेश हुए बल्कि बीच–बीच में विवाह की प्रक्रियाओं को गीतों के द्वारा भी प्रस्तुत किया गया और अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली शैली में विवाह की प्रक्रिया सम्पन्न की गई।

21 मार्च, 2022 को ग्राम दुरियाई, जिला–गौतमबुद्धनगर में चि. विपिन सुपुत्र श्रीमती निर्मला देवी एवं श्री कृष्णपाल सिंह एवं आयु. अर्चना श्रीमती दर्शना देवी एवं श्री संजय डबास का विवाह संस्कार आर्य जगत की विदुषी बहन अंजलि आर्या के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ जिसमें सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, जिला सभा के प्रधान श्री सेवाराम त्यागी जी और विख्यात आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य जी मंच पर विराजमान रहे। विवाह के उपरान्त इन सभी ने वर–वधु एवं दोनों पक्ष के परिवारों को आशीर्वाद एवं साधुवाद प्रदान किया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री रामपाल सिंह आर्य के सुपुत्र श्री कृष्णपाल सिंह, श्री सतीश आर्य एवं श्री श्याम सुन्दर आर्य की इस बात के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की कि इन तीनों भाईयों में जो प्रेम एवं सौहार्द विद्यमान है, ऐसे उदाहरण समाज में बहुत कम मिलते हैं। इस विवाह संस्कार में श्री कृष्णपाल सिंह जी के बजाय उनके दोनों छोटे भाई ही अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे और उनके पिता श्री रामपाल सिंह जी का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त था। अतः वे इस संस्कार को पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न कर सके। श्री कृष्णपाल सिंह जी ने कन्या पक्ष से कोई दहेज नहीं मांगा और न ही उन्होंने किसी प्रकार का कोई सामान या कोई धनराशि, गाड़ी या अन्य कोई वस्तु लेनी स्वीकार की, बल्कि उन्होंने कन्या पक्ष के समक्ष एक ही प्रस्ताव रखा कि वे विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से कराने की व्यवस्था कर दें। इस पर कन्या पक्ष के श्री संजय डबास एवं उनके परिवार ने पूर्ण सहमति व्यक्त करते हुए विवाह को वैदिक रीति से करने की स्वीकृति देकर अत्यन्त उदारता का परिचय दिया। दोनों परिवारों की सहमति से विवाह स्थल पर भव्य वेदी सजाई गई थी। वेदी के दक्षिण दिशा में मंच बनाया गया था जिस पर सभी विद्वान् उपस्थित थे और महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित संस्कार विधि के अनुसार विवाह की प्रत्येक क्रिया वैदिक विधि से ही सम्पन्न की गई और उसका अर्थ बहन अंजलि आर्या ने उपस्थित जन–समूह को बड़े ही सुन्दर ढंग से समझाया। दर्शक अत्यन्त प्रभावित एवं प्रेरित हुए। इस विवाह की दूसरी विशेषता यह थी कि इसमें किसी भी प्रकार के बैण्ड, डी.जे., शराब या अन्य किसी भी फिजूलखर्ची का कोई स्थान नहीं था। सहनाई के द्वारा आगन्तुक अतिथियों का सम्मान किया जा रहा था, मंत्र पाठ हो रहा था और ऐसा लगता था जैसे प्राचीन समय में हुए किसी विवाह संस्कार को दर्शाया जा रहा हो। वर और कन्या आत्मविश्वास से ओत–प्रोत होकर सभी क्रियाओं में उत्साह के साथ सहयोग कर रहे थे और वे पुरोहित बहन अंजलि आर्या द्वारा दिये जा रहे निर्देशों का हृदय से पालन कर रहे थे। ऐसे वैदिक विवाहों से सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और विवाह संस्कारों में हो रहे अपव्यय, फिजूलखर्ची, दिखावा आदि का प्रदर्शन बन्द करना चाहिए। दहेज रहित वैदिक विवाहों से ही गृहस्थ सुखी एवं सफल हो सकते हैं। यही इस विवाह संस्कार का मुख्य संदेश है।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने व्याख्यानों में जन–सामान्य को धर्म के नाम पर चल रहे अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से दूर रहने की प्रेरणा दी और उन्हें वैदिक मान्यताओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया। स्वामी जी ने समाज में फैली कुरीतियों पर भी चोट की और कहा कि गोवंश की रक्षा एवं गोसंवर्द्धन कृषि प्रधान देश के लिए अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांगी की और

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

धूम-धाम से मनाएं नया साल - विक्रमी संवत -2079

- विनोद बंसल

भारत व्रत पर्व व त्यौहारों का देष है। यूं तो काल गणना का प्रत्येक पल कोई न कोई महत्व रखता है किन्तु कुछ तिथियों का भारतीय काल गणना (कलेंडर) में विशेष महत्व है। भारतीय नव वर्ष (विक्रमी संवत्) का पहला दिन (यानि वर्ष-प्रतिपदा) अपने आप में अनूठा है। इसे नव संवत्सर भी कहते हैं। इस दिन पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है तथा दिन-रात बराबर होते हैं। इसके बाद से ही रात्रि की अपेक्षा दिन बड़ा होने लगता है। काली अंधेरी रात के अन्धकार को चीर चन्द्रमां की चांदनी अपनी छटा बिखेरना शुरू कर देती है। वसंत ऋतु का राज होने के कारण प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। फाल्गुन के रंग और फूलों की सुगंध से तन-मन प्रफुल्लित और उत्साहित रहता है।

विक्रमी सम्वत्सर की वैज्ञानिकता

भारत के पराक्रमी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रारंभ किये जाने के कारण इसे विक्रमी संवत् के नाम से जाना जाता है। विक्रमी संवत् के बाद ही वर्ष को 12 माह का और सप्ताह को 7 दिन का माना गया। इसके महीनों का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति के आधार पर रखा गया। विक्रमी संवत का प्रारंभ अंग्रेजी कलैण्डर ईसवीं सन् से 57 वर्ष पूर्व ही हो गया था।

चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर लगाने को एक माह माना जाता है, जबकि यह 29 दिन का होता है। हर मास को दो भागों में बांटा जाता है- कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष। कृष्णपक्ष, में चांद घटता है और शुक्लपक्ष में चांद बढ़ता है। दोनों पक्ष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि ऐसे ही चलते हैं। कृष्णपक्ष के अन्तिम दिन (यानी अमावस्या को) चन्द्रमा बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता है जबकि शुक्लपक्ष के अन्तिम दिन (यानी पूर्णिमा को) चांद अपने पूरे यौवन पर होता है।

अर्द्ध-रात्रि के स्थान पर सूर्योदय से दिवस परिवर्तन की व्यवस्था तथा सोमवार के स्थान पर रविवार को सप्ताह का प्रथम दिवस घोषित करने के साथ चौत्र कृष्ण प्रतिपदा के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वर्ष का आरम्भ करने का एक वैज्ञानिक आधार है। वैसे भी इंग्लैण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान से दिन परिवर्तन की व्यवस्था में अर्द्ध-रात्रि के 12 बजे को आधार इसलिए बनाया गया है क्योंकि उस समय भारत में भगवान भास्कर की अगवानी करने के लिए प्रातः 5-30 बज रहे होते हैं। वारों के नामकरण की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया को देखें तो पता चलता है कि आकाश में ग्रहों की स्थिति सूर्य से प्रारम्भ होकर क्रमशः बुध, शुक्र, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा सहित इन्हीं अन्य छह ग्रहों पर सप्ताह के सात दिनों का नामकरण किया गया। तिथि घटे या बढ़े किंतु सूर्य ग्रहण सदा अमावस्या को होगा और चन्द्र ग्रहण सदा पूर्णिमा को होगा, इसमें अंतर नहीं आ सकता। तीसरे वर्ष एक मास बढ़ जाने पर भी ऋतुओं का प्रभाव उन्हीं महीनों में दिखाई देता है, जिनमें सामान्य वर्ष में दिखाई पड़ता है। जैसे, वसन्त के फूल चौत्र-वैशाख में ही खिलते हैं और पतझड़ माघ-फाल्गुन में ही होती है। इस प्रकार इस कालगणना में नक्षत्रें, ऋतुओं, मासों व दिवसों आदि का निर्धारण पूरी तरह प्रकृति पर आधारित वैज्ञानिक रूप से किया गया है।

ऐतिहासिक संदर्भ

वर्ष प्रतिपदा पृथ्वी का प्राकट्य दिवस, ब्रह्मा जी के द्वारा निर्मित सृष्टि का प्रथम दिवस, सतयुग का प्रारम्भ दिवस, त्रेता में भगवान श्री राम के राज्याभिषेक का दिवस (जिस दिन राम राज्य की स्थापना हुइ), द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस होने के अलावा कलयुग के प्रथम सम्राट परीक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का दिन भी है। इसके अतिरिक्त देव पुरुष संत झूलेलाल, महर्षि गौतम व समाज संगठन के सूत्र पुरुष तथा सामाजिक चेतना के प्रेरक डॉ. केशव बलिराम हेड़गेवार का जन्म दिवस भी यही है। इसी दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। वर्ष भर के लिए शक्ति संचय करने हेतु नौ दिनों की शक्ति साधना (चैत्र नवरात्रि) का प्रथम दिवस भी यही है। इतना ही नहीं, दुनिया के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य जी ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की। भगवान राम ने बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति इसी दिन दिलाई। महाराज विक्रमादित्य ने आज से 2068 वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का उन्मूलन कर यवन, हूण, तुशार, तथा कंबोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहराई थी। उसी विजय की स्मृति में यह प्रतिपदा संवत्सर के रूप में मनाई जाती है।

अन्य काल गणनाएँ

ग्रेगेरियन (अंग्रेजी) कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना 3579 वर्ष, रोम की 2756 वर्ष यहूदी 5767 वर्ष, मिस्र की 28670 वर्ष, पारसी 198874 वर्ष तथा चीन की 96002304 वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 109 वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है। जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रें से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है।

ग्रन्थों व संतों का मत

महात्मा गांधी ने 1944 की हरिजन पत्रिका में लिखा था ''स्वराज्य का अर्थ है- स्वसंस्कृति, स्वधर्म एवं स्वपरम्पराओं का हृदय से निर्वहन करना। पराया धन और परायी परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान"। नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में भी विस्तार से दिया गया है।

स्वाधीनता के पश्चात

देश की स्वाधीनता के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में पंचाग सुधार समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष प्रो. मेघनाथ साहा थे। वे स्वयं तो परमाणु वैज्ञानिक थे ही साथ ही उनकी इस समिति में एक भी सदस्य ऐसा नहीं था, जो भारत की ज्योतिष विद्या या हमारे धर्म शास्त्रें का ज्ञान रखता हो। यही नहीं, प्रो. साहा स्वय भी भारतीय काल गणना के सूर्य सिद्धान्त के सर्वथा विरोधी थे तथा ज्योतिष को मूर्खतापूर्ण मानते थे। परिणामतः इस समिति ने जो पंचाग बनाया उसे ग्रेगेरियन कलेंडर के अनुरूप ही बारह मासों में बांट दिया गया। अंतर केवल उनके नामकरण में रखा। अर्थात जनवरी, फरवरी आदि के स्थान पर चैत्र, बैशाख आदि रख दिए। लेकिन, महीनों व दिवसों की गणना ग्रेगेरियन कलेंडर के आधार पर ही की गई।

पर्व एक नाम अनेक

चेती चाँद का त्यौहार, गुडी पडवा त्यौहार (महाराष्ट्र), उगादी त्यौहार (दक्षिण भारत) भी इसी दिन पडते हैं। वर्ष प्रतिपदा के आसपास ही पडने वाले अंग्रेजी वर्ष के अप्रैल माह से ही दुनियाभर में पुराने कामकाज को समेटकर नए कामकाज की रूपरेखा तय की जाती है। समस्त भारतीय व्यापारिक व गैर व्यापारिक प्रतिष्ठानों को अपना-अपना अधिकृत लेखा जोखा इसी आधार पर रखना होता है जिसे वही-खाता वर्ष कहा जाता है। भारत के आय कर कानून के अनुसार प्रत्येक कर दाता को अपना कर निर्धारण भी इसी के आधार पर करवाना होता है जिसे कर निर्धारण वर्ष कहा जाता है। भारत सरकार तथा समस्त राज्य सरकारों का बजट वर्ष भी इसी के साथ प्रारंभ होता है। सरकारी पंचवर्षीय योजनाओं का आधार भी यही वित्तीय वर्ष होता है।

कैसे करें नव वर्ष का स्वागत

हमारे यहां रात्रि के अंधकार में नववर्ष का स्वागत नहीं होता बल्कि, भारतीय नव वर्ष तो सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है। सभी को नववर्ष की बधाई प्रेषित करें। नववर्ष के ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर में सुगंधित वातावरण बनाएँ। शंख व मंगल ध्वनि के साथ प्रभात फेरीयां निकाल कर ईश्वर उपासना हेतु वृहद यज्ञ करें तथा गऊओं, संतों व बडों की सेवा करें। घरों, कार्यालयों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भगवा ध्वजों व तोरण से सजाएं। संत, ब्राह्मण, कन्या व गाय इत्यादि को भोजन कराएं। रोली-चन्दन का तिलक लगाते हुए मिठाइयाँ बाँटें। इनके अलावा नववर्ष प्रतिपदा पर कुछ ऐसे कार्य भी किए जा सकते हैं जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे, गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु वृक्षारोपण, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने के प्रयास, शिक्षा का प्रसार तथा सामाजिक कुरीतियां दूर करने जैसे कार्यो के लिए संकल्प लें। सामुदायिक सफाई अभियान, खेल कूद प्रतियोगिताएं, रक्त दान शिविर इत्यादि का आयोजन भी किया जा सकता है। आधुनिक साधनों (यथा एस एम एस, ई-मेल, फेस बुक, और्कुट के साथ-साथ बौनर, होर्डिंग व कर-पत्रकों) के माध्यम से भी नव वर्ष की बधाईयां प्रेषित करते हुए उसका महत्व जन-जन तक पहुंचाएँ।

इन श्रेष्ठताओं को राष्ट्र की ऋचाओं में समेटने एवं जीवन में उत्साह व आनन्द भरने के लिये यह नव संवत्सर की प्रतिपदा प्रति वर्ष समाज जीवन में आत्म गौरव भरने के लिए आता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब भारतवासी इसे पूरी निष्ठा के साथ आत्मसात कर धूम-धाम से मनाएं और विश्वभर में इसका प्रकाश फैलाएं। आओ! सन् को छोड़ संवत अपनाएं, निज गौरव का मान जगाएं।।

- मो0 9810949109

uo lEor~lj ij fo'k"k

भारतीय नववर्ष का शुभारम्भ

– पं. वेदप्रकाश शास्त्री, पंजाब

सद्विचार, सद्भावना, उपजे नूतन हर्ष।
मनसा वाचा कर्मणा मंगलमय हो नववर्ष।।
नव आलोक धरा पर फैले, फैले आज चतुर्दिक हर्ष।
नई उमंग, नई तरंग, नव अभिलाषा का हो उत्कर्ष।।

भारतीय संस्कृति में विभिन्न पर्वोत्सव हार में मोतियों की भांति पिरोये हुए हैं। जैसे मोतियों को हार से पृथक नहीं किया जा सकता, वैसे ही इन पर्वों को भारतीय संस्कृति से पृथक नहीं किया जा सकता। ये पर्व हमारे जीवन में सुख, शान्ति, हर्षोल्लास एवं नवप्रेरणा का संचार करते हैं। 11 अप्रैल को प्रारम्भ हो रहा नवसंवत्सर सम्पूर्ण मानव जाति एवं समस्त प्राणियों के लिए मंगलमय हो।

(1) सृष्टि संवत्सर – सृष्टि की उत्पत्ति चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को हुई थी। अतः सृष्टिसंवत्सर का प्रारम्भ इसी समय हुआ था। ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ के अनुसार –

चैत्रमासि जगद् ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही प्रथम सूर्योदय होने पर मेष संक्रान्ति और काल के विभाजन वर्ष अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, दिन, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न, पल, विपल आदि एक साथ प्रारम्भ हुए। उसी समय से यह सृष्टि संवत्सर के नाम से प्रचलित हुआ।

(2) सृष्टि के आदि में वेदज्ञान – वेद मानव संस्कृति, धर्म, कर्म, उपासना, ज्ञान–विज्ञान के मूल आधार हैं। वेदों का ज्ञान सदैव सत्य, सनातन, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, सार्वभौम, अपौरुषेय एवं सर्वमान्य है। ऋग्., यजुः, साम और अथर्व इन चारों वेदों का ज्ञान उस परम पिता परमात्मा ने मानव सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया था, अतः वेदों का प्रादुर्भाव भी मानव सृष्टि के आदि में हुआ था, जिससे सूर्य के प्रकाश के साथ–साथ वेदज्ञान का प्रकाश भी चहुँदिशि विस्तृत हुआ।

(3) युगाब्द का आरम्भ – सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगों का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, अतः इन युगाब्दों का अपना महत्त्व है। आजकल कलियुग चल रहा है, जिसके 5108 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और 5109वाँ युगाब्द आरम्भ हो रहा है।

(4) विक्रमी संवत् – महान् सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की महत्त्वपूर्ण विजयों के उपलक्ष्य में विक्रमी संवत् का शुभारम्भ हुआ। आज भी यह संवत् हमें अन्याय पर विजय प्राप्ति के लिए प्रेरित कर रहा है।

(5) आर्य समाज स्थापना दिवस – वैदिक धर्म के सतत प्रचारार्थ और मानव मात्र के उपकार के लिए महर्षि दयानन्द ने बम्बई (मुम्बई) में डॉ. मानिक चन्द्र की वाटिका में चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा संवत् 1932 तद्नुसार 7 अप्रैल, 1875 को आर्य समाज की स्थापना की थी, जो कि आज भी उनके संदेश को जन–जन तक पहुँचाने हेतु प्रयासरत है। प्रभु सभी आर्यों को ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें जिससे इस पुनीत कार्य में सफल हो सकें।

(6) नववर्ष का आगमन – सामान्यतः सिद्धान्त की बात यह है कि नववर्ष के आगमन के समय कुछ न कुछ नवीनताएँ अवश्य होनी चाहिए। ये नवीनताएँ ऋतुओं एवं वनस्पतियों में आने वाली परिवर्तन के कारण हो सकती हैं।

चैत्रमास में वसंत ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में प्रकृति की अनुपम छटा होती है। आकाश स्वच्छ एवं निर्मल होता है। पेड़–पौधों एवं लताओं पर रंग–बिरंगे खिले हुए फुलों को देखकर मन की कली भी खिल उठती है। वसंत ऋतु में न अधिक ठंड होती है, न अधिक गर्मी। मौसम सुखदायी होता है। मन्द–मन्द गतिशील पवन अपने स्पर्श से आनन्दित एवं रोमांचित कर देती है। इसीलिए वसंत को ऋतुराज कहा जाता है। अतः इसी वसंत ऋतु में नववर्ष का प्रारम्भ मानना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित है।

वसंत ऋतु में वनस्पतियों में भी नवीनता आ जाती है। पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नई कोंपलें निकलती हैं नई कोंपलों का निकलना ही नवीनता का द्योतक है, जो वसंत ऋतु का स्पष्ट लक्षण है। अतः वनस्पतियों की दृष्टि से चैत्र में ही नववर्ष का प्रारम्भ मानना चाहिए।

(7) ईस्वीय सन् के नववर्ष से तुलना – पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग कर ऐसा प्रतीत होता है कि हम भारतीयों ने अपना स्वत्व ही खो दिया है। वस्तुतः विश्व में अपनी भी एक विशेष पहचान है, अपना राष्ट्र है, अपनी सभ्यता और संस्कृति है। अपना संवत् एवं वर्ष है, जिसे हम भूलते जा रहे हैं और ईस्वीय सन् के प्रारम्भ को ही नववर्ष का प्रारम्भ मान बैठे हैं।

ईस्वीय सन् जनवरी मास में प्रारम्भ होता है, परन्तु इस महीने में कड़ाके की सर्दी पड़ती है, जो कि पहले से ही प्रारम्भ हो चुकी होती है। वनस्पतियों में भी कोई परिवर्तन या नवीनता दृष्टिगोचर नहीं होती, अतः जनवरी से नववर्ष मानने का कोई तुक नहीं है। इसे प्राचीन परम्परा मानकर स्वीकार नहीं किया जा सकता। चार–पाँच शताब्दियों से पूर्व ईस्वीय सन् का प्रारम्भ भी अप्रैल मास से माना जाता था, जो वसंत ऋतु में पड़ता था। जनवरी की अपेक्षा यह अधिक युक्तियुक्त था। इतना होने पर भी वित्तीय वर्ष के रूप में आज भी ईस्वीय सन् का प्रारम्भ अप्रैल मास से माना जाता है। जो अपनी प्राचीनता का द्योतक है।

आज हमने अपने दैनिक जीवन में ईस्वीय सन् को अधिक महत्ता प्रदान कर रखी है, जबकि इसकी अपेक्षा विक्रमी संवत् कहीं अधिक श्रेष्ठता, प्राचीनता और विशिष्टता को धारण किए हुए हैं।

(8) आत्मचिन्तन का पर्व – प्रत्येक नववर्ष हमारे लिए आत्मचिन्तन का पर्व होता है। हम सम्पूर्ण वर्ष में किये गये कार्यों का निरीक्षण करें। शुभकार्यों को धारण करें और अशुभ कार्यों को छोड़ने का संकल्प लें। व्यापारी वर्ग वर्ष भर में किए गए व्यापार में लाभ–हानि पर विचार करें। आई हुई त्रुटियों को दूर करते हुए उन्नति की ओर अग्रसर हो।

छात्रवर्ग के लिए शिक्षा का नया सत्र इसी समय अप्रैल मास में शुरू होता है, अतः छात्र भी पिछले परीक्षा परिणाम पर विचार करते हुए और अधिक कर्मठता, लग्नशीलता एवं परिश्रमपूर्वक शिक्षा को प्राप्त करने का व्रत लें।

मंगलकामना :– यह नववर्ष बन्धु–बान्धव, सम्बन्धीजन, इष्टमित्र, नर–नारी सभी के लिए प्रेम, गौरव, सुख, समृद्धि उन्नति एवं प्रसन्नता से परिपूर्ण हो। इस परम पुनीत अवसर पर हम सभी सेवा, परोपकार, सदाचार, सद्व्यवहार, मानवकल्याण, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और प्राचीन गौरव को प्राप्त करने का व्रत लें।

ओ३म्

नव संवत हो मंगलकारी

– स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

नव संवत् हो मंगलकारी, जन–जन में आये सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, सहसा हो अभिवृद्धि।।
मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य शिवं सुन्दर कन–कन।।
आज हमारे अन्तस्तल में, प्रेम भाव हो पुनः प्रदीप्त।
करूणा क्षमा, सहिष्णुता से हो, अन्तर्मन हो फिर उद्दीप्त।।
भाव शत्रुता के मिट जायें, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की इच्छा के अनुकूल कामना।।
राम कृष्ण की, दयानन्द की, परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का हम हित।।
मिटे नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशाएँ हों मंगलमय, जन–जन हो वसुधा पर निर्भय।।
मानवता के मंगलकारी पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें बरण।।
भ्रष्टाचार मिटे, जिसने हैं, किया राष्ट्र को अब आक्रान्त।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उदभ्रान्त।।
रूदन मिटे इस वसुन्धरा का, छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दिये तिलांजलि, जगे धरा पर नूतन आश।।
मानवता की जय का डंका, बजे पुनः भूमण्डल पर।
जन–जन हित हो मंगलकारी आया जो नव संवत्सर।।

– मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, उ. प्र.

सार्वदेशिक सभा की ओर से नववर्ष की मंगल कामना

नव वर्ष यानि सम्वत् 2079 का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 2 अप्रैल, 2022 को होगा। इसी दिन ऋषिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। सार्वदेशिक सभा परिवार नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्यजनों एवं पाठकों के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए सुख, समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

प्रिय पाठकों! इस शुभ दिवस पर महर्षि दयानन्द के ऋणों से अनृण होने का संकल्प लेते हुए आर्य समाज के पुनरोदय में सहभागी बनने का व्रत भी लें।

स्वामी आर्यवेश	पं. माया प्रकाश त्यागी	प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा प्रधान	कोषाध्यक्ष	सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आर्य वीर दल जालौर एवं आर्य समाज के संयुक्त तत्वावधान में 23 मार्च, 2022 को शहीदी दिवस मनाया गया

जालौर : अमर शहीद सरदार भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के शहीदी दिवस पर आर्य वीर दल एवं आर्य समाज के संयुक्त तत्वावधान में विशाल मशाल जुलूस को नए बस स्टैंड से जिला कलेक्टर डॉ. नम्रता वृष्णि, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ अनुकृति उज्जैनिया, सभापति गोविंद टांक, उपखंड अधिकारी चंपालाल जीनगर व जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा श्रीराम गोदारा ने आर्य वीर दल आर्य समाज के प्रधान श्री दलपत सिंह आर्य, आर्य वीर दल के अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार, आर्य समाज लालपोल के प्रधान श्री विनोद आर्य, संचालक श्री प्रशांत सिंह व महामंत्री श्री शिवदत्त आर्य के नेतृत्व में मशाल प्रज्वलित कर विशाल जुलूस को रवाना किया। इस मौके पर जिला कलेक्टर ने कहा कि भारत को आजादी दिलाने वाले शहीद भगत सिंह, सुखदेव एवं राजगुरु का बलिदान तभी सार्थक होगा, जब हम उनके बताए मार्ग का अनुसरण करेंगे। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में इन तीन क्रांतिकारियों का सहयोग अनुकरणीय एवं युवाओं के लिए प्रेरणादायक है।

इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने कहा कि शहीदों की जीवनी से प्रेरणा लेने के साथ–साथ संविधान को मानने की बात कही। उपखंड अधिकारी ने कहा कि आज हम भारत के उन वीर शहीदों को नमन करने के लिए एकत्रित हुए हैं। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जिन्होंने अपननी भरी जवानी को भारत की आजादी के लिए कुर्बान कर दी। सच्चे अर्थों में इन वीर शहीदों का मान सम्मान तभी बढ़ेगा जब हम राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने का संकल्प लेवें।

आर्य वीर दल के महामंत्री श्री शिवदत्त जी ने बताया कि नए बस स्टैंड पहुंचने से पहले सुन्देलाव तालाब स्थित आर्य हनुमान व्यायामशाला, लालपोल स्थित आर्य सुभाष व्यायामशाला तथा पुरानी सब्जी मंडी स्थित आर्य वीरम व्यायामशाला में आर्य वीर और वीरांगना एकत्रित हुए। जहाँ से अलग–अलग आर्य वीरों के जत्थे वैदिक धर्म की जय, इंकलाब जिंदाबाद तथा भारत के शहीदों की जय के उद्घोष करते हुए सभी नए बस स्टैंड पहुंचें। जहाँ पर एक साथ एकत्रित होकर सैकड़ों की तादाद में हाथ में मशालें थामे जुलूस जोशीले नारे लगाते हुए बस स्टैंड से हरिदेव जोशी सर्कल, अस्पताल चौराहा का चक्कर निकालते हुए नगर परिषद् के वीरम मंच पर पहुंचे। जहाँ पर पहुंचकर जुलूस का विसर्जन हुआ।

नए बस स्टैंड पर पार्षद नीतू कंवर के नेतृत्व में, पंचायत समिति चौराहे पर पार्षद श्री हीरा लाल देवासी, हनुमानशाला स्कूल के पास युवा कांग्रेस नेता श्री सलीम भाई मोयला व श्री हरिदेव जोशी सर्कल पर सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा व पूर्व पार्षद श्री भरत मेघवाल द्वारा जुलूस का फूलों की वर्षा कर स्वागत किया गया। अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री दलपत सिंह आर्य ने सभी आगंतुक अतिथियों का आभार जताया। इस मौके पर जिला कुश्ती संघ के अध्यक्ष श्री महेंद्र मुणोत, पार्षद नीतू कंवर, पार्षद श्री हीरालाल देवासी, पार्षद श्री दिनेश महावर, पूर्व पार्षद श्री भैरू सिंह गुर्जर, समाजसेवी श्री लालसिंह राजपुरोहित, श्री भंवर सिंह भाटी, पार्षद श्री भरत मेघवाल, पूर्व पार्षद श्री जगदीश आर्य, शिक्षाविद श्री ओम प्रकाश खंडेलवाल, श्री चन्द्रकांत रामावत, कांतिलाल पुरोहित श्री शंकर लाल प्रजापत, श्री शहजाद खान, श्री लियाकत खान, सरदार हरबंस सिंह काली भाई, श्री जयदीप सिंह राणावत, श्री जेठाराम गुर्जर, जिला क्रीड़ा परिषद सदस्य श्री छगन आर्य, श्री वरुण शर्मा, शाखा नायक श्री गणपत आर्य, श्री मोहन लाल भादरू सहित बड़ी संख्या में आर्यवीर और वीरांगनाएँ उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

आर्य समाज नया बाजार, भिवानी में 25 से 27 मार्च, 2022 को वार्षिक समारोह उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा वेद पर आधारित है

– स्वामी आर्यवेश

समाज सुधार एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही – स्वामी आदित्यवेश

वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए आर्यजन आगे आयें – रामफल आर्य

आर्य समाज नया बाजार, भिवानी का वार्षिकोत्सव समारोह 25 से 27 मार्च, 2022 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय समारोह में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजन एवं उपदेश का कार्यक्रम तथा सायंकाल भजनों एवं व्याख्यानों का कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा पद को श्री रामफल आर्य ने सुशोभित किया और श्री सतपाल मधुर आर्य भजनोपदेशक ने भजनों के द्वारा श्रोताओं को लाभान्वित किया। 27 मार्च, 2022 को मुख्य कार्यक्रम प्रातः 10 से 1 बजे तक आयोजित किया गया था जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक एवं गुरुकुल धीरणवास के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, वैदिक विद्वान् श्री रामफल आर्य, डॉ. महेश चन्द्र आर्य आदि के अतिरिक्त सेवानिवृत्त एस.डी.एम. श्री इन्दर सिंह आर्य, डॉ. भूप सिंह आर्य तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगवीर सिंह आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा वेद पर आधारित है। वेद विरुद्ध मान्यताओं को स्वामी दयानन्द जी ने अमान्य बताते हुए कहा कि वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं से ही मानव मात्र का कल्याण सम्भव है। वेद की मान्यताओं में मुख्य रूप से त्रैतवाद, कर्मफल, पुर्नजन्म, वर्णाश्रम व्यवस्था, पंचमहायज्ञ, अष्टांग योग, सोलह संस्कार, गणित ज्योतिष आदि की संक्षित व्याख्या करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि दुनिया के अन्य मत–सम्प्रदायों एवं विचारधाराओं में त्रैतवाद को स्वीकार नहीं किया जाता। कोई अद्वैतवाद को मानता है, कोई द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को मानता है तथा कोई ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या के सिद्धान्त को प्रचारित–प्रसारित करता है, किन्तु ऋषि दयानन्द जी ईश्वर, जीव तथा प्रकृति को अनादि, अनन्त तथा नित्य मानते थे। स्वामी दयानन्द जी की मान्यता थी कि किये हुए कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है किन्तु दुनिया के बहुसंख्य लोग मानते हैं कि किये हुए पाप कर्मों का फल माफ भी हो सकता है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने अपनी विचारधारा का मूल आधार वेद को माना और जो विचार वेद की मान्यताओं के विपरीत था उसको अमान्य घोषित किया। स्वामी दयानन्द जी अवतारवाद, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, भूत–प्रेत, जादू–टोना, तन्त्र–मन्त्र, गण्डे–ताबीज, झाड़–फूंक, ओपरी–पराई, डाकनी–शाकनी आदि कपोल–कल्पित भ्रांतियों के प्रबल विरोधी थे। वे निराकार ईश्वर की उपासना को वैदिक मानते थे और ईश्वर की प्रतिमा (मूर्ति) की पूजा को वेद विरुद्ध मानते थे। वर्तमान समय में चल रहे धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के विरुद्ध आर्य समाज को शास्त्रार्थ की पद्धति को पुनः लागू करना चाहिए और समस्त अवैदिक मान्यताओं का खण्डन और वैदिक मान्यताओं का मण्डन करना चाहिए। आर्य समाज की विचारधारा की तेजस्विता एवं पैनापन कमजोर नहीं होना चाहिए, बल्कि और अधिक सक्रिय होकर हमें वैदिक सिद्धान्तों को जनता के बीच प्रचारित–प्रसारित करना चाहिए।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द जी की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि समाज सुधार तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। उन्होंने कहा कि जो लोग आर्य समाज को हिन्दुओं का विरोधी बताते हैं उन्हें हैदराबाद के निजाम के खिलाफ आर्य समाज द्वारा चलाये गये ऐतिहासिक आन्दोलन के इतिहास को पढ़ने की जरूरत है। यह विदित होना चाहिए

कि हैदराबाद के निजाम ने मंदिरों में बजाई जाने वाली घण्टियों एवं अन्य धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाया था जिसके विरुद्ध आर्य समाज ने ही प्रचण्ड आन्दोलन चलाकर निजाम को कानून वापिस लेने के लिए मजबूर किया था। आर्य समाज यद्यपि मूर्ति पूजा आदि में विश्वास नहीं रखता किन्तु निजाम के अत्याचारों के विरुद्ध तथा साधारण लोगों के मानव अधिकारों की रक्षा के लिए आन्दोलन करने के लिए अपनी पूरी शक्ति झोंकने के लिए तैयार हुआ। स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हिन्दू समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों यथा बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, छुआछूत आदि के विरुद्ध अभियान चलाया था। उन्होंने विधवा विवाह को पुनः प्रचलित करने, स्त्री शिक्षा के द्वारा दुनिया की आधी आवादी को शिक्षित करने तथा गरीब–अमीर व ऊँच–नीच के भेद को मिटाने के लिए ऐतिहासिक कार्य किये थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में जितने भी प्रमुख क्रांतिकारी हुए हैं वे सभी आर्य समाज की भट्ठी में तप करके निकले और उन्होंने राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी। स्वामी दयानन्द जी के परम शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दन में 'इण्डिया हाऊस' की स्थापना की तथा तमाम क्रांतिकारियों को संगठित करने का कार्य किया था उनकी प्रेरणा से लाला हरदयाल, दादा भाई नौरोजी, श्री भीकाजी कामा, बाबा पृथ्वी सिंह आजाद आदि क्रांतिकारी प्रेरणा लेते थे। इसी प्रकार शहीदे आजम भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह ने स्वामी दयानन्द जी से यज्ञोपवीत लिया था और उनके पक्के अनुयायी बने थे। उन्हीं की प्रेरणा से शहीदे आजम भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह, उनके चाचा सरदार अजीत सिंह तथा स्वयं भगत सिंह ने बलिदान देकर आजादी के आन्दोलन की अग्नि को प्रज्ज्वलित किया था। लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, भाई बाल मुकुन्द, अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खाँ, गणेश शंकर विद्यार्थी, चन्द्रशेखर आजाद और यशपाल आदि क्रांतिकारी भी आर्य समाज ने तैयार किये। स्वामी आदित्यवेश जी ने इस बात पर गहरा रोश व्यक्त किया कि आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे अमृत महोत्सव में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका की घोर उपेक्षा की जा रही है। किसी भी समारोह में स्वतंत्रता आन्दोलन का श्रेय महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज को न देकर उन लोगों को दिया जा रहा है जिनकी स्वतंत्रता आन्दोलन में किसी प्रकार की कोई भूमिका नहीं थी।

श्री रामफल आर्य ने आर्यों का आह्वान किया कि वैदिक संस्कृति को बचाने के लिए हम सभी को संगठित होकर प्रयास करना चाहिए और आर्य समाज को मजबूत बनाना चाहिए। इसके लिए आर्यजनों को आगे आकर कार्य करना होगा।

इस कार्यक्रम में जिन लोगों का विशेष योगदान रहा उनमें मुख्य रूप से आर्य समाज के प्रधान श्री जगदीश सर्राफ, मंत्री श्री अजीत सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नरेश वर्मा, प्रचारमंत्री श्री प्रदीप भारद्वाज, प्रबन्धक श्री सुभाष बौंदिया, श्री बाबूलाल आर्य, श्री इन्दर सिंह आर्य पूर्व एस.डी.एम. डॉ. भूप सिंह आर्य, डॉ. ओम प्रकाश आर्य, श्री जय प्रकाश बोहरा आदि के नाम उल्लेखनी हैं। मीडिया का कार्य श्री अशोक भारद्वाज तथा श्री अनिल आर्य ने बड़ी तन्मयता से किया। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक महाशय दीपचन्द आर्य, बाल्मिकी महापंचायत के प्रदेश अध्यक्ष श्री यशवीर, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी निर्भयानन्द, श्री बलदेव टाक, रिटायर्ड थानेदार श्री बलवीर सिंह, आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। अन्त में प्रीति भोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संस्कृत, वेद तथा आत्म साधना के केन्द्र बनें आर्य समाज

– पं० अभयदेव शर्मा

'आर्य समाज' शब्द इसके संस्थापक, दयानन्द की इस संस्था से अपेक्षा का सूचक है। दयानन्द इस संस्था को एक ऐसे केन्द्र के रूप में देखना चाहते होंगे जो मनुष्य के व्यक्तित्व में निहित 'आर्य' को उजागर कर दे। यह संस्था आर्यों का समुदाय हो, और आर्यत्व का ज्यों–ज्यों उदय अन्य नर–नारियों में होता जाए त्यों–त्यों यह समुदाय बढ़ता जाए, और अन्ततः अपने इस भूतल के सब मनुष्य आर्य हो जाएं।

आर्य होना या न हो पाना, व्यक्ति के संकल्प–बल, जागरूकता और तप पर निर्भर करता है। किसी संस्था का शुल्क देकर 'आर्य' बनने की सस्ती, सरल तरकीब दयानन्द के चित्त में कभी नहीं रही होगी। आर्य–समाज नामक संस्था तो मात्र सवा सौ वर्षों से कुछ अधिक की आयु की है। पर 'आर्य' संज्ञा तो बहुत–बहुत प्राचीन है। धरती की सबसे प्राचीन पोथी–वेद का यह शब्द मनुष्य के दो वर्गों में से एक वर्ग का वाचक है। मनुष्य या तो आर्य हो जाए, अन्यथा वह जन्म से दास तो होता ही है। दास अपना उप–क्षय या विनाश तो करता ही है, दूसरों का भी उप–क्षय ही करता है। इसके विपरीत, आर्य स्वयं बढ़ता है, और अन्यों को भी बढ़ाता ही है। आर्य तो गति–प्रगति–उत्थान–उन्नति–विकास की साक्षात् मूर्ति होता है। जैसे चक्र के अरे चक्र की धुरी में जुड़े रहते हैं और चक्र का स्वरूप–निर्माण करते हैं वैसे, सं–गति, सं–वाद, सं–मनस्कता के साथ सबका मिलकर, गतिमान होना, यह आर्य का शील–स्वभाव होता है। चक्र का आविष्कार मनुष्य के आर्यत्व का एक महान् उद्भेदन था। उससे पूर्व, मनुष्य जमीन पर घिसटा–घिसटा कर अपना भोंड़ा वाहन चलाता रहा होगा। उसमें बड़ा श्रम, विपुल पसीना बहाना पड़ता था। इससे त्राण पाने के लिए चक्र की कल्पना उभरी। गोल–मटोल पत्थर को तीव्रता से लुढ़कते देखा होगा। चिन्तन में कोणकील रखने से जीवन को घसीटना पड़ता है। भावना को चक्राकर रखने से जीवन दौड़ता है। जीवन को सीधा–सपाट रखें और उसका आधार चक्र (समन्वित गति) हो तो, बस, आर्यत्व का उन्मेष हो गया। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों की चक्र–गति प्रकृति में स्पष्ट दीख रही है। जो चक्रवत् नहीं घूमता वह 'धूमकेतु' किस काम का? वह तो जहां पड़ेगा, जीवनलीला की प्रलय करेगा।

मनुष्य अकेला नहीं है। वह परिणाम है दो (शुक्र–शोणित) के रासायनिक मेल का। शुक्र–शोणित परिणाम है ओषधि–वनस्पति का जिसे भक्षण किया जाता है। ओषधि–वनस्पति परिणाम है पानी को। उपनिषद् को ऋषि पर्यावरण के 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' के रहस्य को जानते हुए कहते थे, पानी पुरुष कहलाते हैं, पुरुष बनकर बोलते हैं; 'आपः पुरुष–वचसो भवन्ति'। मनुष्य तो पंचायत है स्वयं में, पंचीकरण हुआ है उसके व्यक्तित्व में अग्नि–वायु–जल– पृथ्वी–आकाश का। शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गंध का परिणाम है वह, जैसे अन्य सब जड़–चेतन पिण्ड हैं। अतः जो भी स्वयं के स्वार्थवश अपने को दूसरों के हिताहित से निरपेक्ष समझता है वह तो दास है, स्वयं दुःखी रहने और अन्यों को दुःखी करने वाला। पर जो जानता है, अनुभव करता है, व्यवहार करता है कि उसमें सृष्टि के सब तत्वों का, अणु–अणु का अंश है, वह सबसे निजता–आत्मीयता–प्रीति रखता है– यही आर्यत्व है।

दयानन्द ने आर्यत्व की खोज में अपने–पराए की गणना कभी नहीं की। सबको परख–परख कर शबरी के मीठे–मीठे बेर एकत्र किए थे। उन्होंने आग्रह कभी नहीं किया, जिद कभी नहीं की, 'मैं जो कहता हूँ वही ठीक है' की। 'सोचो, समझो, भूल सुधारो,– यह था दृष्टिकोण उस दयानन्द का जिसने आर्य–समाज स्थापित की थी। सब देश, सब वर्ग उनके लिए समान रूप से उपदेश दया के पात्र थे। उनका संबोधन भूतल का अखिल मनुष्य समाज था। यह मनुष्य समाज गुण, कर्म, स्वभाव से आर्य समाज हो, दाससमाज नहीं, यह थी उनकी विराट् अभीप्सा।

दयानन्द का यह आर्यत्व–बोध, वैदिक शब्दावली में 'वेद' कहाता है। पोथी को 'वेद' इसलिए कहते हैं लक्षणा से, क्योंकि इसमें 'वेद' विषय का प्रतिपादन है। 'वेद' शब्द का अर्थ ही है बोध। बोध से अपने अजर–अमर आत्मस्वरूप का, अपनी औकात का, अपनी हैसियत का पता चलता है। और तब अपनी सत्ता, अपने बोध का चिरन्तन आनन्द आता है। सच्–चिद्–आनन्द, अपने इस स्वरूप के बोध को 'वेद' कहते हैं। जिसे यह वेद प्राप्त है वह आर्य है। इस बोध को प्राप्त ऋषि–यजमान यज्ञवेदि पर बिछी दर्भ घास की पत्ती को 'वेदोसि'–तू 'वेद'; है, इस प्रकार पुकारता है। घास की हर पत्ती में वेदतत्व विद्यमान है। देखने–सुनने वाला सृष्टि के हर कण में, हर तरंग में वेद का दर्शन करता है। घास की पत्ती सच्–चिद्–'आनन्द है, सूर्य–चन्द्र–नक्षत्र सब सच्–चिद्–आनन्द के विलास हैं। यह बोध होने पर ही तो उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' का शील उभरता है, तभी तो महात्मा की 'मनस्य् एकं, वचस्य् एकं, कर्मण्य एकं' की कसौटी पर मनुष्य खरा उतरता है, तभी तो 'भूतों में आत्मा का, आत्मा में भूतों का दर्शन' हो पाता है।

दयानन्द का आर्य एक परिपूर्ण, संपूर्ण व्यक्तित्व है। दयानन्द का आर्य आर्य है, वेद है– इस धरती की अमूल्य संपत्ति है। आर्य होने के पश्चात् हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, पारसी– ये बिल्ले लगा भी लें तो कोई फर्क नहीं आता। दैनन्दिन जीवन प्रणाली में, रुचि भेद से वेश–भूषा, खान–पान, रीति–रिवाजों के भेद सदा रहे हैं, सदा रहेंगे। पर इस नानात्व में जो मूल तत्व को स्मरण रखता है, वह आर्य है।

दयानन्द 'विश्व को आर्य' करने वाले सोम–बिन्दुओं की धार को देखते थे और मनुष्यों को ऐसी सोमधारा प्रवाहित करने वाले बनाना चाहते थे। सोम की धारा से यज्ञ होता है। मनुष्य के जीवन से भी यज्ञ होना चाहिए। यज्ञ द्वारा मनुष्य देव बन जाता है। वेद की यही सार्थकता है, आत्मबोध की फलश्रुति यही है कि मनुष्य वेद से यज्ञ करते–करते ऋषि बने और फिर देव बन जाए। देव बनने पर हर मनुष्य का जीवन एक 'स्वर्ग' (सुख–धाम) हो जाएगा, जो कि यज्ञ का फल है। यज्ञ वही कर पाता है जिसे 'स्वर्–ग' की कामना हो। हर महामानव ने धरती पर स्वर्–ग उतारने की, धरती को स्वर्–ग बनाने के अरमान संजोए थे। इस धरती पर ईश्वर का– आर्य का राज्य हो, शैतान का– दास का नहीं। हर मनुष्य में निहित 'राम' प्रकट हो और धरती पर रामराज्य हो, रावणराज्य नहीं। किसी भी महामानव की शब्दावली को लें, बात एक ही है। दयानन्द ने इस भावना को 'आर्यसमाज' इस शब्द से व्यक्त किया था।

(२) आर्यसमाज का कल भूत का, इतिवृत्त का विषय है। बहुत काम उसने किए हैं। एक छाप है उसकी इस देश पर। आर्य, वेद, अष्टाध्यायी, महाभाष्य की चर्चा कोई करे तो, आम धारणा है कि, वह आर्य समाज का पक्षधर होना चाहिए। पर अनेक कामों की ओर आर्यसमाज ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। दर्शनों में मीमांसा, वैदिक वांङ्मय में 'ब्राह्मण' ग्रन्थ, कर्मकाण्ड में श्रौत–स्मार्त यज्ञ विधि, संस्कृत को लोकभाषा बनाना– ऐसे अनेक काम आर्य समाज ने छोड़ दिए। परिणामतः आर्यसमाज में यज्ञ के नाम पर घोर अज्ञान, और अज्ञानमूलक अशास्त्रीय यज्ञ विधियों की भरमार है। कोई न कोई कर्मकाण्ड 'अज्ञ कर्मसंगियों' को चाहिए। विग्रह पूजन को छोड़कर, आर्यसमाज ने यज्ञ को स्वीकार किया। पर जो यज्ञ विधि इसकी हैं वे मनमानी हैं, असंख्य हैं, ऊट–पटांग हैं। बुद्धिजीवी होने का अहं करने वाली वह संस्था कर्मकाण्ड के वैसे ही गर्त में जा गिरी है जैसे गत में विग्रह पूजन जा गिराता है। फलतः आर्यसमाज में पेशेवर याजकों की फौज बन गई है जो यज्ञ के नाम पर भोली जनता को बुद्धू बनाते हैं। पारायण एक भिन्न चीज़ है जिसे प्राचीन शब्दों में 'अध्ययन' कहते थे। यज्ञ एक भिन्न चीज है। दोनों को मिलाकर 'पारायण–यज्ञ' नामक एक अशास्त्रीय तरीका आर्यसमाज के पेशेवर याजकों ने ईजाद कर लिया। मार्क्स ने क्या गलत कहा था कि धर्म–रूपी अफीम समाज को मूर्च्छित किए हुए है।

आर्यसमाज का 'आज' एक उच्छृंखल, कट्टर, साम्प्रदायिक, अन्ध–मूढ़ संस्था का रूप है। संस्कृत तो दूर, साहित्यिक हिन्दी तक आर्यसमाज के लोगों के लिए क्लिष्ट होती जा रही है। आर्यसमाज प्रधानतया हिन्दी–भाषी क्षेत्र में है। हिन्दीभाषियों में भी पंजाब, उत्तर प्रदेश के लोगों में प्रायः इसकी छाप है। आर्यसमाज एक फिरका बन कर रह गया है, हिन्दु समाज का। संस्कृत और वेद से दूर होता जा रहा है। दयानन्द के नाम पर दुकान चल रही है। दयानन्द के अरमान हवा हो गए। दयानन्द के घोर तप की छवि बिगाड़ कर रख दी। आम आदमी की धारणा में आर्यसमाजी जिद्दी, झगड़ालू, सनकी किस्म का प्राणी है जो अपनी बात कठोरता, कटुता, आलोचना, दोषदर्शन के बिना नहीं कहता। तर्क और प्रमाण का स्थान मनमानी ने ले लिया है। आर्यसमाज की पत्रिकाओं में वेद नदारद है। वेद पर प्रवचन दुर्लभ हो गए हैं। न निजी चिन्तन है, न अभिनव चिन्तन है वेदमन्त्रों का।

विद्यालय, महाविद्यालय ईसाई, मुस्लिमों ने खोले और अपने मत का प्रचार किया। आर्यसमाज ने भी खोले पर वैदिकता और आर्यत्व का प्रचार नगण्य हो पाया। फलतः आर्य समाज शिक्षण–संस्थाएं, औषधालय, डिस्पेंसरी, अनाथालय, जैसी बातों में व्यस्त हो गया और जायदादें बनाने के लोभ में, रही सही मिशनरी भावना भी गंवा बैठा।

आने वाला कल कैसा होगा? स्पष्ट है, यह गिरावट कहां जाकर रुकेगी, सोचने की, चिन्ता की बात है। दयानन्द भारत को अखिल मानव को वेद की ओर लौटाकर लाए थे। वेद संजीवनी बूटी थी मनुष्य के उद्धार की। आर्यधर्म, आर्य भाषा, आर्य देश की बात कहने वाले दयानन्द की भक्ति वेद की भक्ति का ही दूसरा नाम है। वेद संस्कृत में हैं। संस्कृत और वेद साधन हैं मनुष्य के उदात्त व्यक्तित्व को– आर्यत्व को उभारने के। अतः आर्यसमाज को संस्कृत और वेद पर अपना फोकस फिर से रखना होगा। उसके अन्य सब काम दूसरों ने उठा लिए। अतः अब आर्यसमाज वे ही कार्य करे जो दूसरे नहीं कर रहे हैं।

प्रत्येक आर्यसमाज संस्कृत, वेद और आत्मसाधना का केन्द्र बनना चाहिए। संस्कृत मनुष्य की प्राचीनतम भाषा है, वेद मनुष्य की प्राचीनतम पोथी है। प्रदूषण से रहित वातावरण की चिन्ता का यह सांस्कृतिक रूपांतर है कि हम संस्कृत और वेद की ओर लौटें। इससे मनुष्यों का बौद्धिक प्रदूषण दूर होगा।

नियम है कि अभाव की पूर्ति देश–काल में कोई न कोई करता ही है। आर्य समाज के पथच्युत हो जाने से, संस्कृत और वेद का, आत्मसाधना का बीड़ा अन्यों को उठाना पड़ा है, अन्य उठा भी रहे हैं। क्या आर्यसमाज इस श्रेय से भी वंचित होने को आमादा है। एक–एक करके, पुरानी पीढ़ी के वेदज्ञ जा रहे हैं, नए उभर नहीं रहे आर्यसमाज में कोई दर्शन शास्त्रों को पढ़ाने में रमा हुआ है, कोई व्याकरण घोट रहे हैं, पर वेद पर श्रम करने वाले कहां हैं? 'को वेदान् उद्धृ–हरिष्यति?'

Incarnation of God

How the theory of incarnation of God, became a common belief amongst the Hindus and also amongst other followers of religion, is a very interesting subject. Even the Western philosophers agree that there is not trace of this theory in Vedas and Upnishads. The Christian belief is also of personal God which is more or less shared by Islam. A description of this idea occurs in verses 7 and 8 of Gita.

The interpretation of these verses is that to safeguard the sages, destroy evil doers, and for restoration of Dharma (religion) Shri Krishna manifests himself in all ages. It is no where clearly mentioned in the above verses that God who is all pervading is born in physical form to ac-complish the afore-said objectives. Ac-cording to some thinkers, the idea of incarnation of God entered the Arya Hindus belief when they had become weak in mind and physique. This idea was a consolation to them that the Avtar will take revenge from those who were oppressing the Arya Hindus. In fact the high personalities like Shri Rama and Shri Krishna and the golden deeds they performed, prove that they were liberated souls who according to Swami Dayananda descended on the earthly plane to guide the people in the discharge of their duties.

Now let us consider about the significance of Dharma. Commonly people think that Dharma is another word for religion. But it is not so. Dr. Radhakrishna, the then President of India, in his speech at the National Integration Conference held in 1961 declared that Dharma is that which holds society together, whatever divides disintegrates society, creates sects, that is Adharma.

Shri Rabindra Nath Tagore defines Dharma as duty. But I think the Dharma referred to in two verses of Gita quoted above, apparently means Arya Dharma. Now let us examine from practical point of view whether it is absolutely essential for God to take up physical form to ac-complish certain objectives. In our times, we have witnessed the strikes by postmen, navy men, clerical staffs, bus conductors etc. But it has never come to the notice of any one that the Director General of Post Offices or the Minister incharge of that department doing the job of a postman during the course of postal strikes. Similarly when clerical staff resorted to strikes and office work was paralysed the high officials of that department did not perform the duties of clerks. The same occured in the case of all other strikes. From this, it can be safely inferred that those holding high positions, would never like to shift to lower status whenever there is a departure from duty by their subordinates. But the propagandists of the theory of incarnation of God want us to believe that God, the highest authority in the universe, does not mind to take up the lower and limited status casting off all His highest attributes, merely to carry out certain objectives defined in the Gita. This is in fact devoid of reason and common sense. There are no valid reasons to hold that God took up the physical forms merely to kill cruel kings namely Harnakashyap, Ravana, Kansa etc. and to settle the disputes over kingdom between Kauravas and Pandavas princes. How surprising it is that God is not caring to descent on the earthly plane at the present times when Dharma's more degenerating than the times or Ramayan and Mahabharat?

The other significant point is that Gautam Buddha has been classified as 22th Avtar (incarnation of God in the Puranas, although Budhism founded by Buddha basically differs in many doctrines of Vedic Dharma and its teachings had at one time in the history of India; reduced the followers of Arya Dharma to mere minority sect. However Adi Sankeracharya who is credited with the work of survival of Vedic Dharma, was not exalted to the position of Avtar. Similarly Raja Ram Mohan Ray, Swami Dayananda, Swami Ram Kirshna Paramhans and Swami Vivekananda are not called Avtar although all of them served the case of revival of Vedic Dharma so brilliantly. From all that has been discussed above it is crystal clear that there is not the slightest justification to believe in the theory of incarnation of God.

'So high is His lofty grandeur, yea, the Absolute One is even greater than this. All the existing beings are (only) one part of His (effulgence) and three parts of His immortal (essence) exist in His selfluminous being. -Yaj. XXXI.3

- S. B. Mathur

आर्यनेता श्री के.बी. राय जी का देहावसान

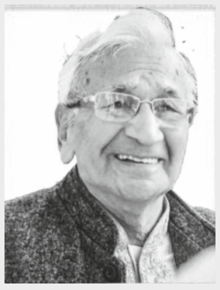

आर्य समाज, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं आर्य सामज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री के.बी. राय जी का विगत दिनों असामयिक निधन हो गया है। श्री राय जी आर्य समाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता थे। उन्होंने प्रारम्भ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं बाद में आर्य वीर दल के व्यायाम शिक्षक के रूप में कार्य किया और अनेकों नव युवकों को महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज की विचारधारा के अनुरूप प्रशिक्षित किया। वह सदैव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग प्रदान करते रहते थे। ऐसे कर्मठ आर्य कार्यकर्ता का निधन आर्य समाज एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होता। श्री के.बी. राय जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

श्री मन्दीप आर्य जी का असामयिक निधन

स्व. श्री ईश्वर सिंह आर्य जी के सुपौत्र एवं श्री यज्ञवीर जी के सुपुत्र श्री मन्दीप आर्य जी का विगत दिनों युवा अवस्था में असामयिक निधन हो गया है। ऐसे होनहार नवयुवक का निधन माता-पिता एवं परिवारजनों को पहाड़ के समान दुःख देने वाली घटना है। प्रिय मन्दीप बहुत ही होनहार नवयुवक था, यह युवा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में नैनीताल में नवयुवकों के लिए लगाये गये युवा निर्माण शिविर में भाग लिया था, उनके आचार-विचार एवं व्यवहार को देखकर स्वामी जी अत्यन्त प्रभावित हुए। ऐसे प्रिय विद्यार्थी के समान श्री मन्दीप के निधन का समाचार सुनकर स्वामी जी को भी आत्मीय रूप से गहरा कष्ट पहुँचा। ऐसे सुयोग्य नवयुवक का निधन परिवार एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होता।

श्री मन्दीप जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

चि. रुद्र मलिक का 16 वर्ष की अल्पायु में निधन

विशिष्ट सहयोगी श्री चन्द्र प्रकाश मलिक जी के भतीजे श्री वीरेन्द्र मलिक के सुपुत्र चि. रुद्र मलिक का 16 वर्ष की आयु में 28 मार्च, 2022 को प्रातः 6 बजे असामयिक निधन हो गया है। यहाँ किसी कवि की ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं -

''क्या गजब हो ज़ज़बाये दिल, कि यह अंजाम हो जाये।
मुसाफिर हो राहे मंजिल और शाम हो जाये।।''

चि. रुद्र मलिक लम्बे समय से बीमार था और उसके उपचार के लिए देश-विदेश के सभी विशेषज्ञ डॉक्टरों का इलाज चल रहा था, परन्तु ईश्वर की व्यवस्था के अनुरूप सभी प्रयत्न विफल रहे और वह होनहार बालक हम सबसे विदा हो गया।

ग्राम ईशपुर खेड़ी, तह.-गोहाना, जिला-सोनीपत के पूर्व सरपंच श्री फूलकुमार मलिक के पौत्र एवं श्री वीरेन्द्र मलिक के सुपुत्र प्रिय रुद्र मलिक का असमय दुःखद निधन न केवल परिवार के लिए बल्कि परिवार के समस्त शुभचिन्तकों एवं सम्बन्धियों के लिए भी अत्यन्त दुःख की घटना है। किन्तु परमपिता परमात्मा के नियम एवं व्यवस्था के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त हमारे पास और कोई विकल्प नहीं होता। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना किया कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवारजनों को इस असह्य कष्ट को सहन की शक्ति प्रदान करें।

आर्यनेत्री श्रीमती शीला देवी जी का आकस्मिक निधन

शराबबन्दी आन्दोलन की अगली पंक्ति की नेत्री श्रीमती शीला देवी जी (धर्मपत्नी स्व. श्री जयनारायण पहलवान त्यागी) अब हमारे बीच में नहीं रहीं। चौधरी बंशीलाल सरकार द्वारा सन् 1996 में की गई शराबबन्दी में विशेष रूप से महिलाओं के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। इसकी शुरुआत सन् 1984 में नाहरी, फिरोजपुर, कतलुपुर, सोनीपत आदि से होते हुए जब 1992 में धर्मपुर, गुरुग्राम पहुंची तो इस शराबबन्दी आन्दोलन का नेतृत्व महिलाओं की तरफ से बहन शीला देवी जी ने किया। शराबबन्दी आन्दोलन में उनके द्वारा किये गये सहयोग को आर्य समाज ही नहीं सम्पूर्ण हरियाणा कभी भुला नहीं सकता। उनके अचानक चले जाने से निश्चित रूप से आर्य समाज एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। परन्तु ईश्वर की व्यवस्था को न चाहते हुए भी सभी को सहन करना ही पड़ता है। श्रीमती शीलो देवी जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

- स्वामी नित्यानंद सरस्वती (महेन्द्र सिंह शास्त्री), उपमंत्री सार्वदेशिक सभा

आर्य नेता श्री प्रवीण आर्य के छोटे भाई श्री विनोद कुमार बवेजा जी का असामयिक निधन

विगत दिनों 27 मार्च 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य के अनुज भ्राता श्री विनोद कुमार बवेजा का 57 वर्ष की आयु में दिल्ली के लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल में निधन हो गया। श्री विनोद कुमार जी के बड़े भाई श्री प्रवीण आर्य जी दिन-रात आर्य समाज के कार्यों में प्राण पण से जुड़े रहते हैं। ऐसे कर्मठ साथी के छोटे भाई का असमय निधन बहुत कष्टकारी है। इस कष्ट की घड़ी में पूरा सार्वदेशिक परिवार उनके साथ खड़ा है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य समाज अटौर नंगला, फिरोज मोहनपुर, जिला–गाजियाबाद (उ. प्र.) में चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ एवं वैदिक विवाह संस्कार का भव्य कार्यक्रम हुआ आयोजित

गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर गोमांस निर्यात पर भी रोक लगाने का आह्वान किया। उन्होंने भारत के गोप्रेमी लोगों से अपील की कि वे अपने घर में एक गोवंश का पालन अवश्य करें और गाय को कटने के लिए कसाईयों को न बेचें। यदि गाय दूध न भी देती हो तो भी उसकी सेवा अन्तिम समय तक की जानी चाहिए। स्वामी जी ने अश्लीलता के बढ़ते हुए प्रभाव को गम्भीर चुनौती बताया और कहा कि इससे युवा वर्ग दिग्भ्रमित हो रहा है और पतन की ओर जा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि चाहे सोशल मीडिया, गूगल या इण्टरनेट की अन्य तकनीक हों, अश्लीलता का प्रचार–प्रसार इन सभी में बन्द होना चाहिए। टेलीविजन के पर्दे पर आने वाली अश्लील फिल्मों, प्रिंट मीडिया में प्रकाशित होने वाली अश्लील चित्रों, कामुकता से ओत–प्रोत कहानियों, गन्दे नॉवेल एवं अश्लील सामग्री का प्रकाशन एवं विक्रय पूर्णतया बन्द किया जाना चाहिए। स्वामी जी ने जातिवाद को समाज की गम्भीर समस्या बताते हुए कहा कि जन्मना जाति के आधार पर ऊँच–नीच तथा छूआछूत समाज का कोढ़ है जिसे मिटाना अत्यन्त आवश्यक है। समाज में छोटे–बड़े, योग्य या अयोग्य का निर्धारण गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर होना चाहिए। समाज में आमूल–चूल परिवर्तन लाने की आवश्यकता पर बल देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य परिवारों के बीच रोटी और बेटी का व्यवहार प्रारम्भ करने की अपील की। विवाहों में गुण, कर्म, स्वभाव मिलाकर अन्तर्राजातीय विवाह समय की आवश्यकता है।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने इस अवसर पर समाज सुधार सम्मेलन में बोलते हुए कहा कि मनुष्य के सुधार से ही समाज का सुधार हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति का निर्माण करने के लिए बचपन से ही संस्कार दिये जाने चाहिए। आज बच्चों को संस्कार नहीं दिये जाते जिससे वे बड़े होकर भटकाव की स्थिति में चले जाते हैं और अपने आपको संभाल नहीं पाते। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि बचपन में बच्चों को माता–पिता अच्छे संस्कार देकर उन्हें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें और वैसा ही वातावरण उन्हें विद्यालयों में अध्यापकों से भी मिले तो बच्चे संस्कारित और शिक्षित बनकर राष्ट्र को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। आज दुर्भाग्य है कि शिक्षा तो दी जा रही है किन्तु संस्कार नहीं दिये जाते जिससे उच्च शिक्षित लोग भी अनेक कुरीतियों में फंसे रहते हैं। अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं, इससे समाज उन्नत नहीं हो सकता। समाज की उन्नति व्यक्तियों के संस्कारित होने से ही हो सकती है। पं. माया प्रकाश जी ने मा. रामपाल सिंह आर्य के परिवार को विशेष रूप से उनके तीनों सुपुत्रों श्री कृष्णपाल सिंह आर्य, श्री सतीश आर्य एवं श्री श्याम सुन्दर आर्य को बधाई दी और कहा कि यह आर्य परिवार निःसंदेह आर्य परम्पराओं का संवाहक है और अपने साधनों से इतने बड़े आयोजन करके आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार को जन–जन तक पहुंचाने में अपनी रचनात्मक भूमिका अदा कर रहा है इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि परिवार में बच्चों के विवाह संस्कार भी यह परिवार पूर्ण वैदिक रीति से करता है अतः इनको चि. विपिन की वाग्दान एवं विवाह संस्कार के लिए भी मैं साधुवाद देता हूँ। पं. माया प्रकाश जी ने विवाह संस्कार में भी सम्मिलित होकर एक उत्तम गृहस्थ बनने की प्रेरणा देते हुए वर–वधु को एक पुस्तक भेंट कर आशीर्वाद दिया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम में जहां अन्य वक्ताओं के उपदेश होते रहे वहीं श्री कुलदीप आर्य, बहन अंजलि आर्या एवं श्री वेदपाल आर्य के भजनों की भी धूम मची रही और लोगों ने मन्त्र मुग्ध होकर पूरे कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689
ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।